REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियाँ

डॉ. मीनू गंगल
असिस्टैन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, डा. के. एन. मोदी यूनीवर्सिटी, निवाई, टोंक, राजस्थान.

ABSTRACT

The present study was aimed to find out the difference between the learning styles of high and low Spiritual Intelligence of Students of Teacher Education. The researchers formulate the hypothesis of no significant difference between the learning styles of high and low Spiritual Intelligence of Students of Teacher Education. The survey method was used and 154 (high 59 and 95 low) Students of Teacher Education population belonging to Jaipur District of Rajasthan State were chosen for the study by random sampling method. The results of the study are present in various tables. The researchers revealed that the no significant difference between individual vs non individual, visual vs audio, short attention duration vs long attention duration, Motivation centred vs non Motivation centred learning styles of high and low Spiritual Intelligence of Students of Teacher Education and the result also showen the significant difference between the the flexible vs non flexible, area free vs area based and Environment focoused vs Environment free learning styles of high and low Spiritual Intelligence of Students of Teacher Education (M.Ed.).

KEY TERMS: *Learning styles, Spiritual Intelligence and Students of Teacher Education (M.Ed.)*

पृष्ठभूमि : किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, क्योंकि वह राष्ट्र का भविष्य निर्माता है। **शिक्षा आयोग** (1964–66) के अनुसार ''भारत के भाग्य का निर्माण विद्यालयीन कक्षा में हो रहा है।'' विद्यालय की कक्षाओं में अध्यापकों की प्रमुख भूमिका होती है। अतः बालक व शिक्षा के उचित विकास के लिये कुशल अध्यापकों को तैयार करना आवश्यक है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराएँ पहुँचाने का केन्द्र बिन्दु और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्ज्वलित रखने में सहायता प्रदान करता है। अध्यापक ही सुचारू रूप से विद्यार्थियों को अधिगम के लिये जिज्ञासु बनाता है, और उनको वांछित लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है। इसके लिये अध्यापक को सभी शिक्षण कौशलों में एवं सम्बन्धित समस्त विधाओं में पारंगत होना चाहिए और उनमें यह पारंगतता उनको प्रदान की जाने वाली अध्यापक शिक्षा अथवा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा लायी जाती है, किन्तु कुछ समय से शिक्षा व्यावसायिक होकर रह गई है, परिणाम स्वरूप शिक्षकों का गुणात्मक विकास नहीं हो पा रहा है। शिक्षा का लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास से अभिप्राय है कि व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ मानसिक रूप से संतुलित भावनात्मक रूप से मजबूत सामाजिक रूप से समायोजित और आत्मिक रूप से ऊपर को उठा हुआ होना चाहिए।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य को भौतिक, सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक के अच्छे अस्तित्व के रूप में परिभाषित किया है। इसका तात्पर्य है कि आध्यात्मिक बुद्धि शिक्षा की नींव से निकट से सम्बन्धित है। अतः आवश्यकता है कि आध्यात्मिक बुद्धि को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। आध्यात्मिक बुद्धि के कोर मूल्यों

में संयुक्तता, करूणा, ईमानदारी, जिम्मेदारी, सम्मान, एकता, सेवा आदि को शामिल किया गया है। इन स्वाभाविक मूल्यों में पाठचयर्या स्वाभाविक अभिव्यक्ति पा सकती है। आध्यात्मिक बुद्धि छात्रों में आत्म जागरूकता विकसित करने में मदद करती है, आत्मविश्वास और तर्कसंगत सोच विकसित करने मे सफलता को बढ़ाती है, यह जीवन की विभिन्न स्थितियों को समायोजित करने में मदद करती है, यह हमें अच्छे और बुरे में अन्तर करने कि क्षमता देती है हमारी नैतिक भावना, हमारी समझ और करूणा के साथ कठोर नियमों का पालन करने की क्षमता देती है। शिक्षण एवं सहशैक्षिक समस्त कार्यों के सम्पादन हेतु एक शिक्षक में विवेकशीलता अन्तःदृष्टि (Intution) सहृदयता या दयालुता, वैयक्तिक मूल्य जैसे साहस एवं ईमानदारी, आत्म चेतना एवं आत्मसम्मान, कृतज्ञता तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति होना आवश्यक है। इस प्रकार के तत्वों की आवश्यकता उन्हें मात्र इसलिए नहीं है कि वह एक विद्यार्थी शिक्षक है बल्कि वह एक सामान्य व्यक्ति भी है और ये सभी तत्व सामान्य व्यक्ति के जीवन मूल्य भी हो होते हैं।

विल्बर (2000) के अनुसार आध्यात्मिकता की कुछ वर्तमान परिभाषाओं को इस प्रकार संक्षेप में व्यक्त किया जा सकता है– (क) आध्यात्मिकता में विकासात्मक रेखाएँ शामिल है, उदाहरण के लिए संज्ञानात्मक, नैतिक, भावनात्मक और पारस्परिकता का उच्च स्तर (ख) आध्यात्मिकता ही एक पृथक विकासात्मक रेखा है। (ग) अध्यात्म (जैसे की प्यार करने के लिए खुलापन) किसी भी चरण में एक दृष्टिकोण है। (घ) अध्यात्म में चोटी के अनुभव शामिल है चरण नहीं एक अभिन्न दृष्टिकोण इन सब विचारों ओर अन्य लोगों को सच मानकर आरम्भ होता है।

ब्रह्माकुमारी, शिवानी (2011) ने स्पष्ट किया कि आध्यात्मिक बुद्धि जन्मजात आन्तरिक आध्यात्मिक गुणों, पारदर्शी सोच, कार्यों और अभिवृत्ति को प्रकट करने की क्रिया है। आध्यात्मिक होने के लिए आवश्यक है सोचना, करना और आपस में सम्बन्धित रहना। एक जागरुकता स्वयं के बारे में आत्मा नहीं, शरीर के रुप में –स्वयं के बारे में जागरुकता से बात करने के लिए हममें से अधिकांश अपने भौतिक रुपों पर विश्वास करते हैं। इसलिए हम हमारे शरीर और उस नाम (लेबल) के साथ जाने जाते है, जो हमने हमारे शरीर को दिया है। जैसे हमारी राष्ट्रीयता, जाति, लिंग, पेशा आदि। स्वयं के बारे में यह गलत अर्थ (समझ) ही क्या सभी भय, गुस्सा और दुःख जीवन में पैदा करती है। एक आध्यात्मिक दृष्टि से यह भावनाएँ हमेशा अहंकार का परिणाम होती है जो आपकी सच्ची आध्यात्मिक प्रकृति जो कि शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्वक व आन्नदपूर्ण है अवरुद्ध करती है। आध्यात्मिक बुद्धि काम में आती है कि क्या आप सही रास्ता जानते है? सही समय पर सही जगह पर, सही इरादे के साथ । उदाहरणार्थ– यदि आप अपने आप को एक आध्यात्मिक अस्तित्व के रुप में जानते हैं तो आपको यह भी जानना चाहिए कि आप किसी के मन मस्तिष्क के स्वामी नहीं है। शिवानी आध्यात्मिक बुद्धि और आध्यात्म को अलग–अलग करते हुए कहती है कि आध्यात्म अपने आप के बारे में ज्ञान है जैसे– आत्मा। अपने सर्वोच्च आध्यात्मिक गुण और विशेषताएँ, जो की प्रेम, शांति, पवित्रता और आन्नद का उत्तरदायी कारण है। आध्यात्मिक बुद्धि अपने विचारों, दृष्किोण और व्यवहार के माध्यम से इन सभी जन्मजात आध्यात्मिक गुणों की अभिव्यक्ति है। आध्यात्मिक बुद्धि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों जैसे– वयक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन, कार्यस्थल जीवन, ध्यान, अवलोकन, सम्बन्ध, प्रतिबिम्ब, अभ्यास आदि पर अपना प्रभाव डालती है।

जोहर एवं मार्शल ईआन (2000) ने अपनी पुस्तक स्प्रिचुअल इन्टैलीजेन्स–दी अल्टीमेट इन्टेलीजेन्स (Spirital Intelligence – The Ultimate Intelligence) में आध्यात्मिक बुद्धि को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है – (अ) आध्यात्मिक बुद्धि का अर्थ मात्र धार्मिकता से ओत–प्रोत होना नहीं समझा जाना चाहिए। यह तो मानव मस्तिष्क, मन तथा आत्मा की आन्तरिक तथा अन्तरंग योग्यता तथा क्षमता है। (ब) आध्यात्मिक बुद्धि ही वह बुद्धि है, जो हम क्या हैं, क्यों हैं, हमारे जीवन का क्या लक्ष्य हैं, तथा उसके क्या आदर्श और मूल्य हैं, आदि प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने में कार्यरत रहती है। (स) यही वह बुद्धि है जो हमारी संज्ञानात्मक तथा संवेगात्मक बुद्धि को एक उचित प्रकार की दशा और दिशा प्रदान कर उनका सर्वोत्तम उपयोग करने में हमारी मदद करती है ताकि हम अपनी प्रतिभाओं द्वारा अपने तथा दूसरों के जीवन को खुशहाल बनाये रखने में सफल हो सकें। (द) आध्यात्मिक बुद्धि पूरी तरह सार्वभौमिक होती है। यह दुनिया के किसी भी कोने में किसी भी जाति, वर्ग, धर्म या लिंग के व्यक्तियों में पायी जाती है जो लोग अपने लिए तथा दूसरों के लिए जीते हैं। ऐसे सज्जन, सहृदयी व्यक्तियों में इसकी बहुतायत मिलती है।

अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थी जिस प्रकार अधिगम करते हैं, अपने संवेगों पर नियंत्रण स्थापित करते हैं, सूचनाओं को ग्रहण करते हैं, स्मरण करते हैं तथा विचार करते हैं आदि पहलू उनके अधिगम के तरीके को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों का अधिगम उनकी अधिगम शैली से प्रभावित प्रतीत होता है किन्तु एक विद्यार्थी शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि के साथ प्रशिक्षण संस्थाओं के लिये भी यह जानना आवश्यक हो गया है कि वह कैसे विद्यार्थी शिक्षकों के अधिगम एवं अधिगम के तरीकों को आधार दे सकता है।

अधिगम शैली वह तरीका है जिसमें अधिगमकर्ता अधिगम वातावरण को समझता है, अन्तःक्रिया करता है एवं अपनी प्रतिक्रिया देता है। संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तत्व अधिगम शैली के तत्व हैं, ये व्यक्ति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से दृढ़ता से प्रभावित होते हैं। वह पथ है जिसमें व्यक्ति सूचनाओं को ग्रहण करता है, समझता है, अभिव्यक्त करता है और याद रखता है, यह वह रीति है जिससे व्यक्ति उत्कृष्ट अधिगम करता है। एक व्यक्ति द्वारा ज्ञान एवं कौशल प्राप्ति के लिए अपनाया गया तरीका है। इससे सम्बन्धित शब्दावलीः संज्ञानात्मक शैली व बहुआयामी बुद्धि है। एक वरीयतात्मक रीति, जिसमें एक विषयी अधिगम स्वामित्व, समस्या समाधान व चिन्तन करना पसन्द करता है एवं अध्यापन विद्या सम्बन्धित स्थितियों में सामान्यतः प्रतिक्रिया देता है। वह वरीयता पथ है जिसमें एक व्यक्ति अधिगम वर्गीकरण में पहचाने गये तीनों आयामों– संज्ञानात्मक (ज्ञान), मनोगत्यात्मक (कौशल) एवं भावात्मक (अभिवृत्ति) में नये उद्दीपनों एवं सूचनाओं के साथ अन्तःक्रिया करता है, उन्हें प्राप्त करता है व उपयोग में लेता है।

अधिगम शैली की कोई एक निश्चित, स्पष्ट एवं सर्वमान्य परिभाषा करने में विभिन्न शोधकर्ता, शिक्षाविद् अथवा मनोवैज्ञानिक सफल नहीं हुए हैं। फिर भी विभिन्न अध्ययनों में अधिगम शैली को और बेहतर ढ़ंग से समझने का प्रयास अवश्य हुए हैं। विभिन्न परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात् **अग्रवाल** (1987) द्वारा दी गयी परिभाषा को अपेक्षाकृत पूर्ण माना जा सकता है। इस परिभाषा के अनुसार अधिगम शैली ''अधिगम व्यवहार में विभिन्न तत्वों (भौतिक, सांवेगिक, वातावरणीय सामाजिक आदि) के लिए व्यक्ति का वरीयताओं का कुल योग है।'' उपर्युक्त विवेचन आध्यात्मिक बुद्धि एवं अधिगम शैली को सम्प्रत्ययात्मक रूप से समझने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं अधिगम शैली को अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों अधिगम व्यवहार के सन्दर्भ में समझने का प्रयास अग्रांकित विवरण में किया जा रहा है। **रोहिल** (2008) के अनुसार उनका ध्यान आध्यात्मिक अनुभवों पर केन्द्रित था, उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता विस्तृत है। इनके अनुसार आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता वह है जिसमें हम अपने अर्न्तज्ञान के बारे में जान सकते हैं तथा इसमें विभिन्न योग्यताओं को उजागर करने की योग्यता है।

उपर्युक्त वर्णित अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि एक व्यक्ति की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का सम्बन्ध उच्च स्तर के क्रियाशील कार्य में कामयाब होने से उच्च स्तर की आत्मक्षमता से है। शोधकर्ता के मन में बार–बार यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि एक अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों के जीवन में आत्मक्षमता, कार्यो की क्रियाशीलता तथा उच्च निर्णयों का विशेष स्थान होता है तो उसकी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का उसकी अधिगम शैली वरीयताओं पर भी प्रभाव पड़ना चाहिए।

विद्यार्थियों के विषयवस्तु पर उच्चत्तम स्तर के स्वामित्व एवं उनके अधिगम के मध्य सार्थक विभेद पाया जाता है। यह विभिन्नताएँ विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं के सन्दर्भ में इन्द्रियों के वैकल्पिक या प्रासंगिक उपयोग के लिए अपेक्षित योग्यता युक्त व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पर बल देती है। अधिगम शैली अध्ययन क्षेत्र ने कक्षा कक्ष शिक्षण की अपेक्षा व्यक्तिगत शिक्षण पर अधिक बल देने के क्रम में अधिगमकर्ता के व्यक्तिगत इन्द्रिय बोधात्मक वरीयताओं (Individual sensory perceptual preference) को प्रकट करते हुए अधिगमकर्ता की वैयक्तिकता को उभारा है। विद्यार्थियों की अधिगम शैली का वास्तविक ज्ञान शिक्षक को विद्यार्थियों के अनुकूल व्यावहारिक शैक्षिक कार्यक्रम निर्मित करने के लिए आधार का कार्य करते हुए अर्थपूर्ण विद्या विषयक (cholastic) अभिवृद्धि के अवसरों को संवर्द्धित कर सकता है। अधिगम शैली से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य एवं इस क्षेत्र में हुए अध्ययनों के गहन विश्लेषण एवं सिंहावलोकन ने अनुसंधात्री की अधिगम शैली के क्षेत्र में कार्य करने की जिज्ञासा विकसित की।

अनुसंधात्री स्वयं अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त अनुभवों के आधार पर यह अनुभव करती है कि विद्यार्थियों की अधिगम शैलियाँ कक्षा–कक्ष में अनुदेशन एवं विद्यार्थी अधिगम को प्रभावित करती हैं। अधिगम तथा अधिगम शैली साहित्य का अवलोकन भी यह प्रमाण प्रस्तुत करता है कि आध्यात्मिक बुद्धि, विद्यार्थी अधिगम को

प्रभावित तो करती ही है; किसी न किसी रूप में इनकी अधिगम शैलियों के विनिश्चयन में भी इनकी भूमिका हो सकती है। **गंगल (2002)** के अनुसार विशिष्ट प्रकार के संगठनात्मक वातावरणों के साथ शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैली का अल्पाधिक सम्बन्ध है।

उपर्युक्त (आध्यात्मिक बुद्धि, अधिगम शैली) वर्णन से स्पष्ट है कि एक अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों को त्याग, तपस्या, नमनीयता, सहिष्णुता, सहयोगी, समय प्रबन्धन आदि कार्य करने से है। अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों की उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि का उसकी अधिगम शैली वरीयताओं पर प्रभाव अनेक चरों के माध्यम से देखा जा सकता है। लेकिन आध्यात्मिक बुद्धि के संदर्भ में एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों से सम्बन्धित कोई अध्ययन अनुसंधात्री को प्राप्त नहीं हुआ है। क्या विभिन्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैली वरीयताओं में अन्तर होता है? प्रश्न द्वारा उद्घोलित होने पर अनुसंधात्री ने आध्यात्मिक बुद्धि के संदर्भ में एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की एवं अपनी शोध समस्या को वाक्यात्मक रूप प्रदान किया।

1.2 समस्या कथन : अनुसंधात्री द्वारा शोध अध्ययन हेतु अपनी शोध समस्या का निम्नलिखित रुप में प्रस्तुत किया है– **उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियाँ।**

1.3 अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध उद्देश्य के निर्धारण के महत्व को ध्यान में रखते हुए अनुसंधात्री ने अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य का निर्धारण किया है– **उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का अध्ययन करना।**

1.3.1 सहायक उद्देश्य : उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित एवं वातावरणोन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली की तुलना करना।

1.4 परिकल्पना : प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुसंधात्री ने निम्नलिखित घोषणात्मक (Declerative) शोध परिकल्पना का प्रतिपादन किया है– **उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों में सार्थक अन्तर है।**

1.4.1 सहायक परिकल्पना : उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित एवं वातावरणोन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है।

1.5 शोध विधि : प्रस्तुत शोध कार्य में यथास्थितिक आधार पर एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का अध्ययन करने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

1.6 जनसंख्या : प्रस्तुत शोध अध्ययन जयपुर जिले में स्थित अध्यापक शिक्षा संस्थानों द्वारा संचालित एम.एड. पाठयक्रम में अध्ययनरत् एम.एड. के समस्त विद्यार्थी प्रस्तुत शोध की जनसंख्या है।

1.7 न्यादर्शन एवं न्यादर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन के न्यादर्श हेतु न्यादर्श चयन की यादृच्छिक गुच्छ विधि (Random clustur sampling Method) का उपयोग कर विभिन्न अध्यापक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् 240 एम.एड. विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें से उच्च एवं निम्न (क्रमशः 59 एवं 95) आध्यात्मिक बुद्धि वाले 154 (प्रभावी न्यादर्श) के रुप में एम.एड.विद्यार्थियों से प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर शोध परिणाम तक पहुँचा गया है।

1.8 प्रयुक्त शोध उपकरणों का विवरण : अनुसंधात्री द्वारा अपने शोधकार्य के लिये आवश्यक प्रदत्त एकत्रित करने हेतु अग्रांकित दो शोध उपकरण **अ. आध्यात्मिक बुद्धि परीक्षण** (डा0रोकैईया जैनुद्दीन एवं अन्जुम अहमद) और **ब. अधिगम शैली अनुसूची** (डा0सुभाष चन्द्र अग्रवाल) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है।

1.9 सांख्यिकी प्रविधियाँ : प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों की तुलना हेतु एस.पी.एस.एस.12 की सहायता से 2×2 की आसंग तालिका (2×2 Contingency table) द्वारा काई वर्ग के मान की गणना की गयी है।

1.10 शोध प्रदत्त विश्लेषण एवं अर्थापन : शोध परिकल्पना (संख्या–1.4.1) 'उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित एवं वातावरणोन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है', के परीक्षण हेतु 'उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित एवं वातावरणोन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली में सार्थक अन्तर नहीं है' रूपी शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

तालिका संख्या : 01 से 07 तक
उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियाँ

क्रम संख्या		आध्यात्मिक बुद्धि	नमनीय	गैर नमनीय	योग	मुक्तांश 01 पर काई वर्ग का मान
1.	अ	उच्च	13	46	59	2.804′
	ब	निम्न	33	62	95	
	योग		46	108	154	
क्रम संख्या		आध्यात्मिक बुद्धि	वैयक्तिक	गैर वैयक्तिक	योग	मुक्तांश 01 पर काई वर्ग का मान
2.	अ	उच्च	45	14	59	3.951′′
	ब	निम्न	84	11	95	
	योग		129	25	154	
क्रम संख्या		आध्यात्मिक बुद्धि	दृश्यात्मक	श्रवणात्मक	योग	मुक्तांश 01 पर काई वर्ग का मान
3.	अ	उच्च	18	41	59	7.224′′
	ब	निम्न	50	45	95	
	योग		68	86	154	
क्रम संख्या		आध्यात्मिक बुद्धि	क्षेत्र स्वतन्त्र	क्षेत्र आधारित	योग	मुक्तांश 01 पर काई वर्ग का मान
4.	अ	उच्च	28	31	59	0.019′′
	ब	निम्न	44	51	95	
	योग		72	82	154	
क्रम संख्या		आध्यात्मिक बुद्धि	लघु अवधान	दीर्घ अवधान	योग	मुक्तांश 01 पर काई वर्ग का मान
5.	अ	उच्च	18	41	59	

	ब	निम्न	61	34	95	16.547''
	योग		79	75	154	
क्रम संख्या		आध्यात्मिक बुद्धि	अभिप्रेरणा केन्द्रित	अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित	योग	मुक्तांश 01 पर काई वर्ग का मान
6.	अ	उच्च	16	43	59	8.211''
	ब	निम्न	48	47	95	
	योग		64	90	154	
क्रम संख्या		आध्यात्मिक बुद्धि	वातावरणोन्मुख	वातावरण मुक्त	योग	मुक्तांश 01 पर काई वर्ग का मान
7.	अ	उच्च	21	38	59	1.118'
	ब	निम्न	42	53	95	
	योग		63	91	154	

''सार्थकता के 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक।
'सार्थकता के 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं।

तालिका संख्या : 02, 3, 5 एवं 6 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि काई वर्ग का अवकलित मान 3.951, 7.224, 16.547, एवं 8.211 है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक तालिका मान 3.841 से अधिक है। अतः शोध परिकल्पना 'उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि एवं अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है' को स्वीकृत किया जाता है तथा शून्य परिकल्पना 'उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि एवं अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित अधिगम शैली में सार्थक अन्तर नहीं है' को अस्वीकृत किया जाता है। परिणामतः यह सामान्यीकरण स्थापित होता है कि उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले अध्यापक शिक्षा के एम.एड. विद्यार्थियों की वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि एवं अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या : 01, 4, एवं 7 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि काई वर्ग का अवकलित मान 2.804, 0. 019 एवं 1.118 है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक तालिका मान 3.841 से कम है। अतः शोध परिकल्पना 'उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित एवं वातावरणोन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है' को अस्वीकृत किया जाता है तथा शून्य परिकल्पना 'उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित एवं वातावरणोन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली में सार्थक अन्तर नहीं है' को स्वीकृत किया जाता है। परिणामतः यह सामान्यीकरण स्थापित होता है कि उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित एवं वातावरणोन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है।

1.11 शोध निष्कर्ष, चर्चा एवं सुझावः

उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों के अध्ययन हेतु निर्मित शोध परिकल्पना (तालिका संख्या : 1.4.2, 3, 5 व 6) के परीक्षण हेतु अधिगम शैली से संबंधित मूल प्राप्तांकों के सांख्यिकीय विश्लेषणोपरान्त पाया गया है कि उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. में अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि, एवं अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित अधिगम शैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक अन्तर है। साथ ही सम्बन्धित तालिकाओं में प्रदर्शित प्रदत्तों से यह भी प्रदर्शित होता है कि उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों ने नमनीय, क्षेत्र स्वतन्त्र एवं वातावरणोन्मुख अधिगम शैलियों को

वैयक्तिक, दृश्यात्मक, लघु अवधान अवधि एवं अभिप्रेरणा केन्द्रित अधिगम शैली की तुलना में उच्च वरीयता प्रदान की। साथ ही आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों ने वैयक्तिक, दृश्यात्मक, अभिप्रेरणा केन्द्रित एवं वातावरणोन्मुख अधिगम शैलियों को वरीयता प्रदान की है अर्थात् उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड विद्यार्थी किसी शैक्षिक कार्य को एक समूह के साथ या टीम के रूप में करना पसन्द करते हैं, सर्वोत्तम अधिगम हेतु वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव आवाज में अपनी पाठ्य सामग्री को सुनते हैं। संरचित अधिगम परिस्थितियों में अधिगम को वरीयता नहीं देते है, अधिगमकर्ता अर्न्तप्रज्ञा उपागम का उपयोग करते हैं। जीवन में कभी–कभी सफलता प्राप्त कर पाते हैं। वे कठिन परिश्रम नहीं करते एवं अपनी असफलता के कारण दूसरों में खोजते हैं तथा सदैव असन्तुष्ट रहते हैं। इस प्रकार अधिगम शैली का यह आयाम विशेष महत्व का है, क्योंकि यह बालक की अधिगम में सफलता से सीधा जुड़ा हुआ है।

उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों के अध्ययन हेतु निर्मित शोध परिकल्पना (तालिका संख्या : 1.4.1, 4 व 7) के परीक्षण हेतु अधिगम शैली से संबंधित मूल प्राप्तांकों के सांख्यिकीय विश्लेषणोपरान्त पाया गया है कि उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित एवं वातावरणोन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक अन्तर नहीं है। साथ ही प्रदत्तों से यह भी स्पष्ट होता है कि उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड. विद्यार्थियों ने नमनीय, क्षेत्र स्वतन्त्र एवं वातावरणोन्मुख अधिगम शैलियों को वरीयता प्रदान की है अर्थात् उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले एम.एड विद्यार्थी किसी समस्या के परम्परागत समाधानों से सन्तुष्ट न होने वाले तथा सदैव अद्वितीय प्रतिक्रियाओं तथा समाधानों तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। वे लम्बे समय अवधि तक किसी अधिगम कार्य पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते तथा उस अधिगम कार्य को जारी रखने हेतु बीच–बीच में कुछ खाने–पीने की आवश्यकता महसूस करते हैं, छात्र अध्ययन के दौरान भौतिक वातावरण उष्णता, ध्वनि, प्रकाश आदि से प्रभावित होते हैं। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन की तुलना में न्यादर्श का आकार बढ़ाकर अध्ययन करने से प्राप्त परिणामों की पुष्टि की जा सकती है। किन्तु व्यापकता की दृष्टि से उचित होगा कि इसी राज्य एवं अन्य राज्यों में भी विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैलियों को आध्यात्मिक बुद्धि, संकाय, लिंग तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं आदि के संदर्भ में एम.एड., बी.एड. एवं शिक्षाशास्त्री तथा अन्य अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों पर भी इसी प्रकार के अध्ययन किये जाये।

सन्दर्भ –

- **अग्रवाल, सुभाषचन्द्र** (1983), ए कम्पैरीटिव स्टडी ऑफ लरनिंग स्टाइल्स ऑफ हाई एण्ड लो क्रिएटिव स्टूडैक्न्टस बिलोंगिंग टू डिफरैन्ट टाइपस ऑफ इन्स्टीट्यूशनस, मेरठ यूनिवर्सिटी, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनलन–ए, 45, नं.–9, 1995, 3350.
- **अग्रवाल, सुभाषचन्द्र**, लरनिंग स्टाइल : ए न्यू एरिया ऑफ रिसर्च, जनरल ऑफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, 17(3), 1981, 172–177.
- **अग्रवाल, सुभाष चन्द्र,** लरनिंग स्टाइल्स एमंग क्रियेटिव स्टूडैन्टस, इलाहाबाद, सैण्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस, पी–6, 1987.
- **बुच एम.बी.,** थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन(1978–82), न्यू दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी.1981.
- **गंगल, महेश कुमार** (2002), राजस्थान के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के संगठनात्मक वातावरण एवं इसका प्रशिक्षणार्थियों की अधिगम शैलियों पर प्रभाव का अध्ययन, कानपुर, अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय।
- **गोस्वामी, वंदना एवं मीनू गंगल,** (2015), अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं अधिगम शैलियाँ, इनक्सिटिव टीचर, ए पीयर रिव्यू रैफ्रीड बाई एनुअल रिसर्च जर्नल ऑफ मल्टीडिसीपिलीनरी रिसर्चज, एस. आर. एस. डी., मैमोरियल शिक्षा शोध संस्थान, आगरा, वाल्यूम.02, अंक. 01, जून 2015, पृ.सं 01–08.

- **जैनुद्दीन, रोकैईया एवं अन्जुम अहमद** (2010), मैनुअल फॉर रोकन स्प्रीचुअल इंटेलीजेंस टैस्ट, आगरा, नेशनल साइकोलॉजीकल कॉरपोरेशन।
- **कपिल, एच.के.,** सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में), आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- **नागपाल, एस. और जी के जुनेजा**, कोन्सेप्चुअल ईवोल्यूश्न ऑफ एण्ड़ परस्पेक्टिव्स इन ऐज्युकेशन्, जनरल ऑफ दा सोसायटी फॉर ऐज्युकेशनल रिसर्च एण्ड़ डवलपमैण्ट, बडौदा, 2005, वोल्यूम. 21, न.4, पेज न. 211–214.
- **शर्मा, आर.ए.,** शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर.लाल बुक डिपो, 2001.
- **सिंह, एम.पी. एवं ज्योत्सना सिन्हा** (2013), इम्पेक्ट ऑफ स्प्रीचुअल इन्टेलीजेन्सी आन क्वालिटी ऑफ लाइफ डिपार्टमेंट ऑफ ह्यूमॅनिटिज इलाबाद यूनिव्हर्सिटी, इन्टरनेशनल जरनल ऑफ पब्लिकेशन वाल्यूम. 3, इश्यू 5, मई 2013. www.ijsrp.org/research-paper-0513/ijsrp-p1705
- **शिवानी, ब्रह्मकुमारी**, ''वॉट इज स्प्रीचुअल इंटेलीजेंस'' timesofindia. Indiatimes. com/life-style/what-is-spiritual-intelligence/articleshow/5343214.cms
- **उपाध्याय, शालिनी**, एक्सप्लोरिंग स्प्रीचुअल क्वोशन्ट् एण्ड एनालिजिंग इटस इमपेक्ट ऑन द रिसर्च परफोरमेन्स ऑफ यूनिव्हर्सिटी टीचर्स,13 अगस्त 2013. university.bits-pilani.ac.in

विल्बर, के., इन्टीगल सायकॉलोजी बोस्टन शम्भाला 2000, 197–217.

डॉ. मीनू गंगल
असिस्टैन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, डा. के. एन. मोदी यूनीवर्सिटी, निवाई,
टोंक, राजस्थान.